NEHRU BAL PUSTAKALAYA

चिड़ियाघर में

रस्किन बांड







ISBN 81-237-2064-5
पहला संस्करण : 1974
चौदहवीं आवृत्ति : 2005 *(शक 1927)*

Who's Who at the Zoo *(Hindi)*
रु. **13.00**
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क
नई दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

चिड़ियाघर में

रस्किन बांड

अनुवाद
मस्तराम कपूर

फ़ोटो और सज्जा
रघुराय

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

चिड़ियाघर तुम्हारे लिए है

इस भीड़ भरी दुनिया में, जहाँ जंगल और वीरान इलाके तेजी से समाप्त होते जा रहे हैं, अनेक पशु-पक्षियों को भोजन और विश्राम की जगह ढूंढ़ने में कठिनाई बढ़ती जा रही है। पशु-पक्षियों की कुछ जातियां समाप्त हो चुकी हैं। जो बची हैं उनको अक्सर चिड़ियाघर में ही शरण मिलती है।

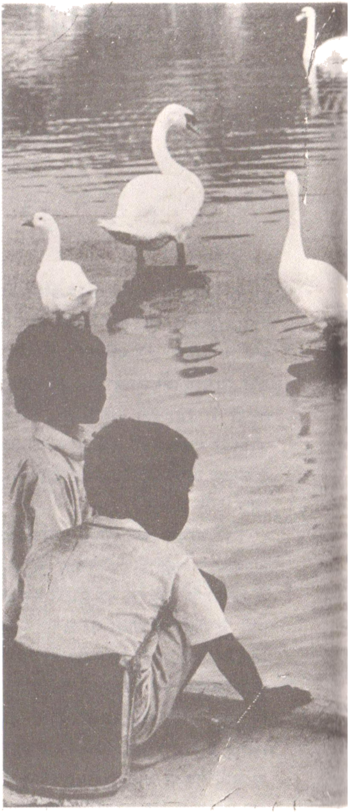
चिड़ियाघर का काम वन्यप्राणियों का संरक्षण नहीं है। असल में यह बहुत से पशुओं के लिए एक बड़े होटल की तरह होते है। वन्यप्राणियों को सबसे अच्छा संरक्षण पशु-पक्षी विहारों में मिलता है। चिड़ियाघर का काम इतना ही है कि वह पशुओं को मनुष्यों के संपर्क में लाता है ताकि हम भिन्न-भिन्न स्थानों से आये पशुओं और पक्षियों की सुंदरता को निकट से देख सकें और उनके रहन-सहन के मनमोहक ढंग से आनंद प्राप्त कर सकें। गैंडे को देखने के लिए काज़ीरंगा पशु-विहार में जाना और बबर शेर को देखने के लिए गीर के जंगलों में भटकना हर एक के बस की बात नहीं है। किंतु दिल्ली में रहनेवाला कोई भी बच्चा चिड़ियाघर में इन जानवरों को देख सकता है। जागुआर नामक चीते या रंग-बिरंगे मकाव को देखने के लिए दक्षिण अमरीका के जंगलों की साहसपूर्ण यात्रा सब नहीं कर सकते किंतु दिल्ली, अहमदाबाद, जयपुर, लखनऊ, बंबई जैसे शहरों में रहनेवाला कोई भी व्यक्ति चिड़ियाघर में इन आकर्षक जानवरों को देख सकता है।

ऐसे चिड़ियाघर सबसे अच्छे माने जाते हैं जिनमें जानवरों को वैसा ही वातावरण मिलता है जैसा उन्हें वन में मिला करता था। आखिर पशु भी तो मनुष्यों की तरह सुख-दुख अनुभव करते हैं। इससे करुण दृश्य और क्या हो सकता है कि जंगल का आज़ाद प्राणी इतने छोटे पिंजरे में बंद हो जाये कि आसानी से हिल-डुल भी न सके।

दिल्ली का चिड़ियाघर एशिया का

सबसे बड़ा चिड़ियाघर है । दुनिया के सबसे अच्छे चिड़ियाघरों में इसकी गिनती होती है। इसमें पक्षियों की बस्ती के लिए काफी पानी, हिरणों के लिए खुला बगीचा, शेरों के लिए गुफाएं, चीतों के लिए पेड़ और जहाँ पिंजरों की जरूरत है, वहाँ बड़े-बड़े साफ-सुथरे पिंजरे हैं। यह एक आदर्श चिड़ियाघर है जिसकी तुलना एक अच्छे होटल से की जा सकती है। सच बात तो यह है कि पक्षियों की बस्ती के कुछ निवासी तो अपनी इच्छा से यहाँ आकर बस गये हैं।

पशुओं के बारे में जानने का सबसे अच्छा तरीका है उन्हें ध्यान से देखना। मेरी यह पुस्तक चिड़ियाघर में पाये जानेवाले कुछ पशुओं से तुम्हारा परिचय भर करा सकती है। इनमें से कुछ तो बहुत प्रसिद्ध हैं, जैसे शेर और हाथी। कुछ पशु तुम्हारे लिए अजनबी भी हो सकते हैं जैसे मेंड्रिल और ज़ेबरा। हाँ, सभी पशुओं का परिचय देना इस पुस्तक में संभव नहीं है। दुनिया के सब पशुओं का वर्णन करने के लिए तो बड़ा मोटा ग्रंथ लिखना होगा जो एक बहुत अच्छी बात होगी, क्योंकि वह दिन बड़ा दुर्भाग्य-पूर्ण होगा जब दुनिया के सारे पशुओं को एक छोटी-सी सूची में रखा जा सकेगा।





सारस

यदि तुम भारत के किसी गाँव में या उसके निकट कभी रहे हो तो तुमने लंबी-लंबी टाँगों से पानी में चलनेवाले चमर-घेंघ सारस को जरूर देखा होगा जिसे गाँव के आस-पास खुले जलवाले भाग वहुत पसंद हैं। इसे अंग्रेजी में 'एड्जुटेंट' कहते हैं जिसका अर्थ है सेना का अधि-कारी। यह नाम इसीलिए दिया गया है कि इसकी चाल अकड़कर परेड करते हुए सैनिक जैसी होती है।

सुंदर लहरदार पंख, बड़े आकार का नंगा सिर, लंबी टाँगें, इन सबसे यह पक्षी काफी सुंदर और सैनिक अधिकारी के पद के योग्य लगता है इसकी चोंच वड़ी मजबूत होती है जिससे यह खरगोश



जैसे पशु और मुर्गे जितने पक्षी को निगल सकता है। कुछ गिद्धों की तरह यह भी बहुत काम का पक्षी है क्योंकि यह गाँव के मैल-कुचैल को साफ करता है और साँप, गिरगिट आदि हानिकारक जीवों को मार डालता है।

इस सारस को बड़ी आसानी से पालतू बनाया जा सकता है। मेरे दादा के पास अनेक पालतू पशु थे उनमें एक



चमरघेंघ सारस भी था। उसकी आदत थी कि वह भोजन के समय दादा की कुर्सी के पीछे खड़ा हो जाता था और वहीं खड़े होकर भोजन करता था।

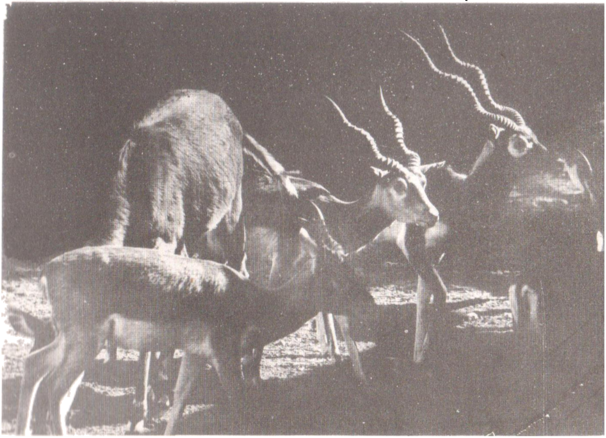
कुछ लेखकों ने इस सारस को बद-सूरत पक्षी कहा है। इसका कारण है इसकी लंबी चोंच और गरदन से लटकती लंबी थैली। लेकिन सुंदरता के संबंध में लोगों के विचार अलग-अलग होते हैं और मैं उन लोगों में हूँ जो चमरघेंघ को सुंदर मानते हैं। इसका एक गुण यह है कि वह शांत पक्षी है, उसमें आवाज़ पैदा करनेवाले स्नायु नहीं होते। वह केवल जबड़ों से किटकिटाने की आवाज़ ही निकाल सकता है। जब यह अपने साथी के लिए बेचैन होता है तो धीमी घुरघुराहट की आवाज निकाल सकता है।

चमरघेंघ पानीवाली जगहों में सारे भारत में पाया जाता है। यदि आप शहर में रहते हैं तो बहुत संभव है कि आप उसे चिड़ियाघर में पक्षियों की बस्ती में देख सकें। यहाँ पर आप उसके संबंधी चमचाचोंच से भी मिल सकते हैं। यह पक्षी चमरघेंघ जितना बड़ा तो नहीं होता लेकिन अपनी चम्मच जैसी चौड़ी-काली चोंच से जल-जीवों को बड़ी आसानी से पकड़ लेता है।

काला हिरन
या
भारतीय मृग

सौ साल पहले पंजाब, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में हजारों काले हिरनों का झुंड आम दिखायी देता था। आज बीस-तीस हिरनों का झुंड भी विरले ही दिखायी देता है। जहाँ खेती-बाड़ी होती है वहाँ भी ये खुले मैदानों में रहना पसंद करते हैं। चूंकि यह फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं इसलिए किसानों में इनका स्वागत नहीं होता।

काले हिरनों में नर हिरन के ही सींग होते हैं। ये सींग चिंकारा या भारतीय कलपुंछ के सींगों से काफी बड़े होते हैं



और आमतौर पर ये दो फुट से भी अधिक लंबे होते हैं। ये सीधे ऊपर की ओर बढ़ते हैं और फिर पेंच खाते हुए मुड़ जाते हैं। काले हिरन के सुंदर सींग और आंखों को लुभानेवाला रंग ऐसा होता है कि कोई अन्य हिरन उसकी बराबरी नहीं कर सकता है।

अन्य हिरनों की तरह काला हिरन भी जुगाली करता है। पहले वह घास या दूसरे भोजन को बिना चबाये निगल जाता है और बाद में उसे मुंह में उगल कर धीरे-धीरे चबाता है। उसके चबानेवाले दाँत अनाज पीसने की चक्की की तरह होते हैं। इस तरह भोजन करनेवाले सभी पशुओं को रोमंथी या जुगाली करनेवाले पशु कहते हैं। इन पशुओं के पास अपने बचाव का उपाय नहीं होता। खूंखार जानवरों के खतरे के कारण वे लंबे समय तक एक जगह पर नहीं टिक सकते। इसीलिए वे ज्यादा से ज्यादा घास जल्दी-जल्दी खा लेते हैं और फिर कहीं सुरक्षित स्थान में बैठकर आराम से उसे दोबारा चबाते हैं।



चिंपेंज़ी

यदि इस पुस्तक में चिंपेंज़ी की चर्चा नहीं होगी तो वह बहुत नाराज होगा। हमने इसमें बेबून लंगूर की चर्चा की है और चिंपेंज़ी तो बेबून से बहुत अधिक सभ्य है। यह इतना सभ्य है कि शायद जानवरों में गिना जाना भी उसे अच्छा नहीं लगेगा। मनुष्य से मिलते-जुलते जितने भी पशु इस धरती पर जीवित बचे हैं उनमें मनुष्य से सबसे अधिक समानता चिंपेंज़ी में ही है। बहुत संभव है वह लेखक से यह कहना चाहे, 'यदि तुम मुझे चिड़ियाघर में रखना चाहते हो तो तुम्हें भी उसमें रहना चाहिए।'

इसमें कोई संदेह नहीं कि चिंपेंज़ी मनुष्यों के बीच रहना चाहता है। वह हमेशा जंगल के प्रसिद्ध नायक टार्ज़न के साथ रहता है। सच बात तो यह है कि टार्ज़न की फिल्मों में काम करनेवाले चिंपेंज़ी अपना पार्ट याद करने में कभी-कभी टार्ज़न का काम करनेवाले 'सुपर-मैन' को भी मात दे देते थे।

चिंपेंज़ी की आयु उतनी ही होती है जितनी कि मनुष्य की। इस प्रकार नौ वर्ष का चिंपेंज़ी नौ वर्ष के बालक के लिए आदर्श साथी होगा। दोनों में बहुत समानताएं होती हैं।

जेरल्ड डरेल नामक लेखक जो सारे विश्व के चिड़ियाघरों के लिए जानवरों को इकट्ठा करता है, अपने साथ एक चिंपेंज़ी रखा करता था। यह चिंपेंज़ी चाय पीते समय, भोजन करते समय और भोजन के बाद सिगरेट पीते समय उसका साथ देता था। चिंपेंज़ी बड़े आत्म-विश्वास के साथ धुएं का कश लेता था और फिर नाक से धुआं छोड़ता था। चिंपेंज़ी को सरदी अच्छी नहीं लगती और वह जल्दी ही कपड़ों की ज़रूरत को समझने लगता है। एक चिंपेंज़ी को नये कपड़ों से इतनी प्रसन्नता होती थी कि जब कभी उसे नयी पोशाक दी जाती थी, वह पुरानी पोशाक को फाड़ डालता था ताकि वह उसे दोबारा न पहननी पड़े।

अजीब बात यह है कि चिंपेंज़ी वन्य अवस्था में भी पेड़ों की चोटियों पर रहने की बजाय ज़मीन पर रहना ज्यादा पसंद

करता था। कुछ लोग सोचेंगे कि इस तरह तो वह तेंदुए का आसानी से शिकार बन जाता होगा (बंदर जाति को तेंदुओं का बड़ा भय होता है)। लेकिन ये बंदर अधिक संख्या के कारण सुरक्षित रहते हैं। अपनी लंबी-मज़बूत बाहों, बड़े-बड़े हाथों और पैरों के साथ चिंपेंजी आश्चर्य-जनक रूप से बलवान भी होते हैं। उनका असली घर पश्चिमी अफ्रीका है किंतु यदि उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ में एक सीट दे दी जाये तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी।









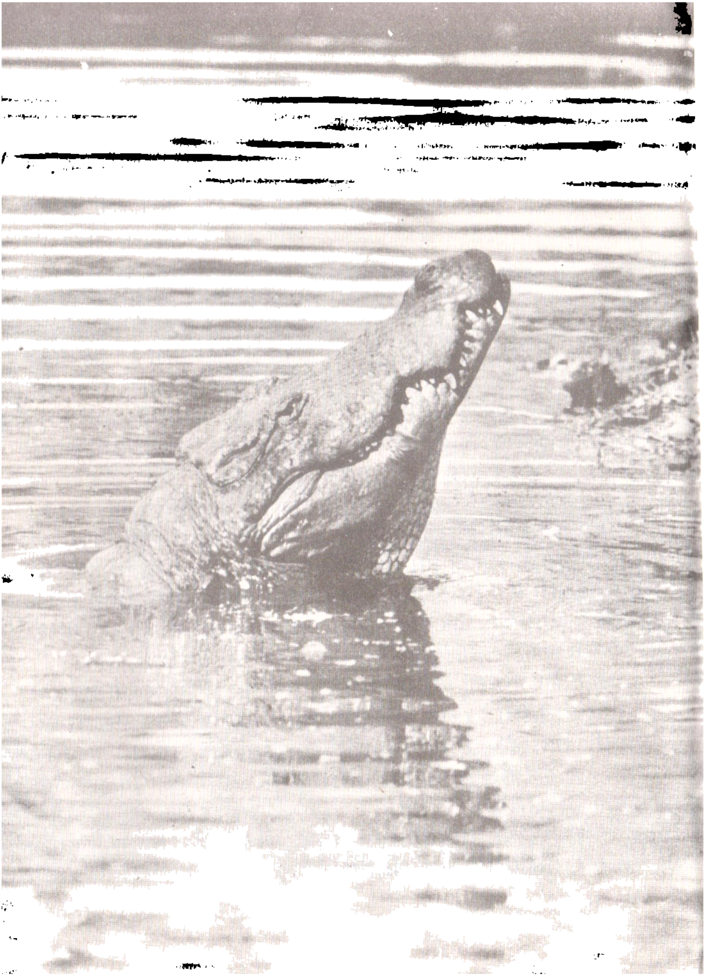
काकातुआ

अधिकांश चिड़ियाघरों में एक दो काकातुए होते ही हैं। यदि इनके रहने की जगह बहुत तंग न हो तो ये पक्षी पालतू बनने पर खूब फलते-फूलते हैं। ये आस्ट्रेलिया से आते हैं। इनका रंग बर्फ की तरह सफेद होता है और सिर पर कलगी होती है। कुछ साधारण सफेद होते हैं जिनके गाल, सीने और पंखों के नीचे के भागों पर गुलाबी रंग की झांई होती है और चमकीली धारीदार लाल-पीली कलगी होती है। काला काकातुआ स्लेटी काला होता है। उसके गाल ज़र्द-लाल और लंबे-काले पंखों की कलगी होती है।

काकातुआ अनेक प्रकार से हमारा मनोरंजन करता है। वह ऊटपटांग हरकतें करता है। उसे लोगों का ध्यान लगाकर उसकी ओर देखना और प्रशंसा करना बहुत अच्छा लगता है। उसे बार-बार अपना नाम बताने का भी बड़ा शौक है। यदि आप उसकी बातों की ओर ध्यान नहीं देंगे तो वह चीखने लग जायेगा।

सुआ जाति के और पक्षियों की तरह काकातुआ को भी अपनी चोंच को पैनी बनाने में आनंद आता है। उसे जो भी लकड़ी का टुकड़ा मिलता है उसे कुतर डालता है। उसकी चोंच बड़ी मज़बूत होती है लेकिन वह जान-पहचानवाले व्यक्ति के हाथों पर और मुंह पर उसे बिना कोई कष्ट पहुंचाये चढ़ सकता है। लेकिन जिस आदमी को वह जानता नहीं है उसकी उंगलियों का स्पर्श उसे पसंद नहीं है, इसीलिए उसके पिंजरे में कभी हाथ न डालियेगा नहीं तो वह उंगलियों को बुरी तरह काटेगा।

मेरे दादा के पास एक ऐसा काकातुआ था जो परिवार के सब लोगों को पहचानता था और उनको सही नाम लेकर भी पुकार सकता था। इस दृष्टि से ये काकातुए हमारे उन तोतों से ज्यादा अक्लमंद हैं जो हर किसी को 'गंगाराम' ही पुकारते हैं।



मगर

क्या आपने मगर के चेहरे पर बिखरी मुस्कान को ध्यान से देखा है? यह मुस्कान हमेशा बनी रहती है, केवल उस समय को छोड़कर जब वह अपना भोजन निगलने के लिए अपने बड़े-बड़े जबड़ों को खोलता है। यह उस समय भी मुस्कराता हुआ दीखता है जब वह अपने शिकार को भयानक पूंछ मार कर अपने जबड़ों के पास ले आता है।

चिड़ियाघर का मगर बड़ा सुस्त दिखायी देता है। वैसे, वह हमेशा ही सुस्त दीखता है। स्वतंत्र जीवन में भी उसकी यही आदत होती है। नदी के किनारे वह चुपचाप पड़ा रहता है और पुराने पेड़ के तने जैसा लगता है।

मगर को ताजे मांस की अपेक्षा सड़ा हुआ मांस ज्यादा अच्छा लगता है। आम तौर पर वह अपने शिकार को कहीं गाड़ देता है और उसे खाने के लिए तब निकालता है जब वह काफी बदबूदार हो जाता है। इस तरह की कई कहानियां सुनने को मिलती हैं कि इनके चंगुल में फंसे आदमियों ने मुसीबत से निकलने के लिए मृत होने का बहाना किया ताकि मगर उन्हें कहीं दबा दे और वे मौका पाकर अपनी कब्र से निकल भागें।

दलदल के मगर को भारत के कई भागों में पवित्र माना जाता है। गंगा नदी के मगरों को घड़ियाल कहते हैं। घड़ियालों का थूथन लंबा और पतला होता है जिसकी सहायता से वे सिर को इधर-उधर चलाकर मछलियों को पकड़ते हैं। अफ्रीकी मगर या नील के मगर सबसे अधिक संख्या में पाये जाते हैं, किंतु ये मगर भी अब बहुत कम हो गये हैं क्योंकि मगर की खाल के जूतों और हैंडबैगों का बहुत प्रचलन हो गया है।

यदि मगर इस दुनिया से लापता हो गये तो यह बड़े दुर्भाग्य की बात होगी क्योंकि रेंगनेवाले जीवों में ये बहुत पुराने हैं। इस धरती पर पहला मगर बीस करोड़ वर्ष पहले प्रकट हुआ था जब महाकाय डाइनोसोरस धरती पर घूमता था। हमारे ये मगर रक्षा-साधन और भारी आकार के कारण, उन लुप्त दैत्यों से अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक मिलते-जुलते हैं।

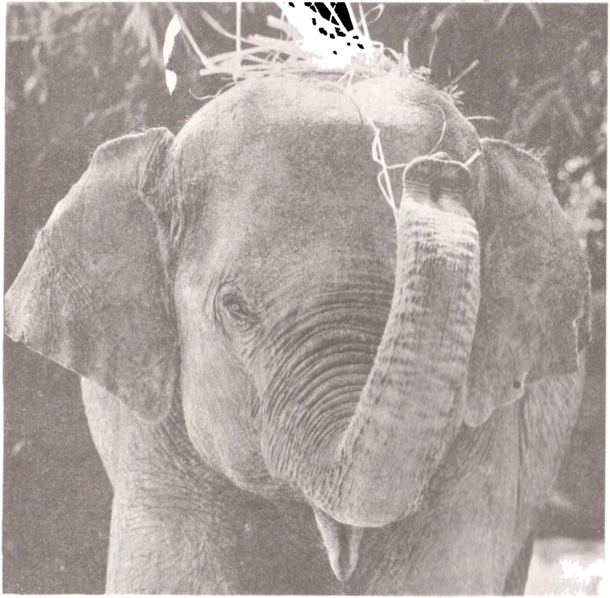
मगर और घड़ियाल आपस में संबंधी हैं लेकिन इनमें कुछ अंतर है। घड़ियाल जो अमरीका के दलदलों और बड़ी-बड़ी नदियों में रहते हैं, काफी डरपोक होते हैं। यदि कोई उन्हें न छेड़े तो वे भी किसी को नहीं छेड़ते।

हाथी

हाथी के बिना चिड़ियाघर अधूरा ही रहेगा यद्यपि हम भारत में जयपुर या मैसूर की सड़कों पर अक्सर हाथी देखा करते हैं । हाथी सबको अच्छा लगता है। आप कहीं भी जायें इनकी बुराई में कहीं कोई कड़ी बात आप नहीं सुनेंगे। इन भारी-भरकम पशुओं में शक्ति और कोमलता का, बच्चों की-सी रूठने की आदत और विनोदी स्वभाव का, भारी वज़न और नर्तक के समान पैरों के नाजुक संतुलन का मेल होता है ।

हाथी हिन्दू और बौद्ध लोककथाओं का प्रिय पात्र है और सब जगह उसे बहुत प्यार किया जाता है । महावत अपने हाथी को जैसे सुंदर नाम देता है, वैसे किसी और पशु को नसीब नहीं होते, जैसे मोती, कमल, कालानाग, सुनहरी आदि । हथिनियों के नाम के आगे 'प्यारी' शब्द भी अक्सर जोड़ दिया जाता है ।

इन पशुओं का इतना आदर क्यों किया जाता है, इसके कारण का पता आसानी से लगाया जा सकता है । हाथी बहुत समझदार, परिश्रमी और आज्ञाकारी होते हैं । वे आदमियों को पसंद करते हैं और शीघ्र ही उनके तौर-तरीकों के अनुसार अपने को ढाल लेते हैं। (यह बात भारतीय हाथी के बारे में ही कही जा सकती है, अफ्रीकी हाथी के बारे में नहीं, जिसका उसके सुंदर दांतों के कारण बड़ी निर्दयता से शिकार किया



जाता है) । हाथी प्यार का बदला प्यार से चुकाते हैं । वे बहुत फुरतीले और ताकतवर होते हैं और देखने में तो शानदार होते ही हैं । हाथी के इन गुणों को देखते हुए यदि मैं उसके लिए पुस्तक में कुछ ज्यादा जगह दूं तो यह अनुचित नहीं होगा । वैसे भी वह सब से ज्यादा जगह लेता है और सबका चहेता है ।

भारत में जंगली हाथी अब भी पाये जाते हैं किंतु अधिकतर हाथी को अब पालतू पशु ही कहा जाता है । जंगली हाथियों को पालतू हाथी घेर कर लाते हैं क्योंकि वे अपने संबंधियों को सभ्य बनाने के लिए शीघ्र ही प्रभावित कर

लेते हैं। लेकिन हाथी कसा व्यवहार करेगा इसका पहले से अनुमान नहीं लगाया जा सकता। मैंने एक ऐसे पालतू हाथी को देखा है जिसने बाढ़ से घिरे हुए ग्रामवासियों को बचाया था और एक अन्य अवसर पर उसी हाथी ने गुस्से में आकर गाँव के डाकघर को तोड़-फोड़ दिया था।

हाथियों को पालना बहुत खर्चीला काम है और प्राचीनकाल में केवल राजा ही अपने लिए हाथी रख सकते थे। राजा इन हाथियों की देखभाल के लिए बहुत से नौकर रखते थे। इसीलिए यह कहावत चल पड़ी है कि हाथी के पाँव में अनेक पाँव होते हैं।

समारोह के अवसरों पर (जैसे गणतंत्र दिवस की परेड पर) हाथी को अब भी सजाया जाता है। महावत उसे लिटा देता है और फिर उसे बच्चे की तरह नहलाया जाता है। महावत की आज्ञा के अनुसार वह कभी अपना सिर उठाता है, कभी टाँग। उधर महावत का छोटा लड़का हाथी के भारी भरकम शरीर पर चढ़ जाता है और उसे ईंट से रगड़ता है। हाथी कभी-कभी साबुन के पानी से खेलने लगता है और उसे सूंड में भरकर बुलबुले छोड़ता है।

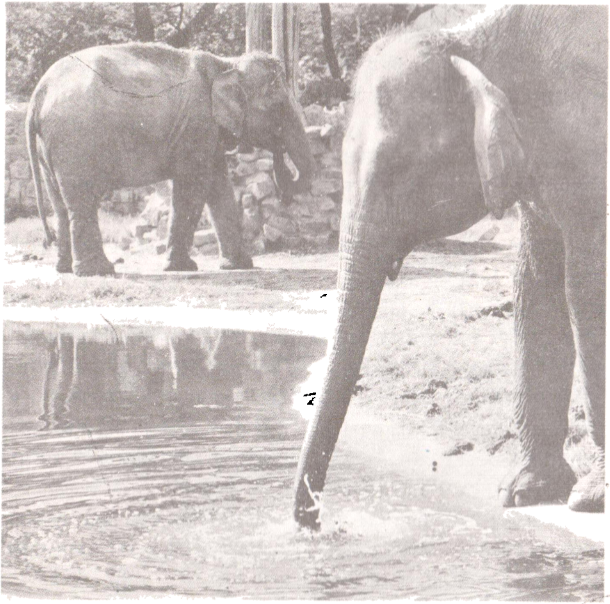
नहलाने के बाद उसे सजाया जाता है। सबसे पहले मस्तक, सूंड और कानों पर रंगों से आकृतियाँ बनायी जाती हैं। कुछ महावत इस काम में बहुत निपुण होते हैं। इसके बाद सूत की रस्सियों से हौदे को कसा जाता है। इस प्रकार उसकी चमड़ी रगड़ नहीं खाती। हौदे को भी भली प्रकार से सजाया जाता है।

इस सारी तैयारी के दौरान हाथी बड़े धैर्य का परिचय देता है। किन्तु कभी-कभी सारी तैयारी के बाद वह कुछ शरारत भी कर देता है। आस-पास से कुछ पत्ते और घास-फूस उठाकर अपनी पीठ पर डाल लेता है ताकि परेड शुरू होने से पहले महावत को कुछ और परिश्रम करनी पड़े।

हाथी की सूंड सबसे ज्यादा चर्चा के योग्य है। यह सूंड़ हाथी की लंबी नाक है। यदि तुम इसे ध्यान से देखो तो उसमें सबसे आगे दो छेद दिखायी देंगे जो तुम्हारी नाक के छेदों या किसी भी पशु की थूथनी के छेदों जैसे होंगे। जिस तरह हम अपनी नाक से साँस लेते हैं, उसी तरह हाथी अपनी सूंड से साँस लेता है। लेकिन नाक का काम करने के साथ-साथ हाथी की सूंड हाथ का काम भी करती है। इसकी सहायता से हाथी जमीन पर पड़ी चीज उठा लेता है और

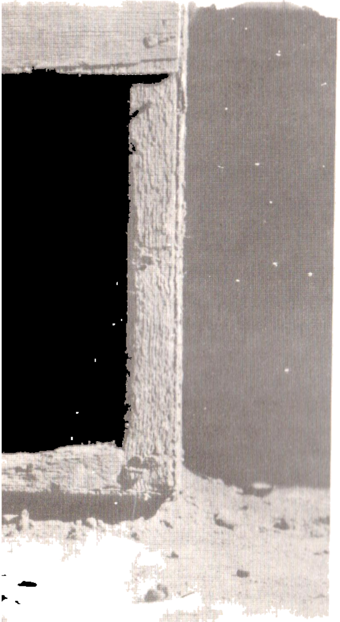
पेड़ों से पत्ते तोड़ सकता है। हाथी सूंड से पानी भी पीता है। सूंड के अगले भाग को पानी में डुबाकर वह साँस लेता है जिससे पानी सूंड में भर जाता है। इसके बाद वह सूंड को इस तरह मोड़ता है कि नथने खुले मुँह के पास आ जायें। जब वह साँस छोड़ता है तो सूंड का पानी मुँह में चला जाता है।

सचमुच हाथी की सूंड़ एक अजूबा है।



गिन्नी पिग





गिनी पिग बच्चों को हमेशा बहुत प्यारे लगते हैं। देखने में ये छोटे-छोटे खरगोशों की तरह लगते हैं। सच बात तो यह है कि इनका यह नाम उपयुक्त नहीं है क्योंकि ये पिग याने सूअर नहीं, रोडेंट की जाति के होते हैं और ये गिनी से नहीं आते बल्कि दक्षिणी अमरीका से आते हैं। किंतु ये कुछ-कुछ सूअर की तरह आवाज ज़रूर करते हैं। शायद इसीलिए इन्हें यह नाम दिया गया है।

गिनी पिग बहुत सुंदर और शांत, लघु जीव होते हैं और प्रायः उन्हें पालतू पशुओं के रूप में रखा जाता है। ये पूर्ण शाकाहारी होते हैं। इनका भोजन वही होता है जो खरगोश का होता है किंतु इन्हें गाजर का ऊपरी भाग और अजमोद सबसे ज्यादा पसंद है। फल और चाय की पत्तियाँ भी इन्हें खूब भाती हैं। इनके बाल छोटे-छोटे और सफेद होते हैं और रंग गहरा-भूरा होता है जिस पर काले-सफेद और पीले धब्बे होते हैं।

गिनी पिग बहुत जल्दी-जल्दी बच्चे देते हैं। ये दस मास की आयु में बच्चे देने लगते हैं और एक बार में छह या आठ बच्चे देते हैं। जन्म के बाद छह सप्ताह के अंदर-अंदर ये आत्म-निर्भर हो जाते हैं और माँ और बच्चे देने के योग्य हो जाती हैं।

दरियाई घोड़ा

बदसूरती में दरियाई घोड़े की बराबरी शायद कोई बड़ा पशु नहीं कर सकता। यह पशु पश्चिमी अफ्रीका और कांगो की नदियों में रहता है। कंधे तक वह चार फुट से कुछ अधिक होता है। उसकी



लंबाई ग्यारह-बारह फुट होती है और वज़न पांच हजार से आठ हज़ार पौंड तक होता है। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी होती हैं, छोटे कान बड़े अजीब से लगते हैं और नथने इस प्रकार होते हैं कि सारा शरीर पानी के नीचे होने पर भी वह साँस ले सकता है। अधिकतर लोगों को उसका बहुत बड़ा मुंह सबसे आकर्षक लगता है। वह जंभाई लेता है तो गुलाबी रंग के बड़े-बड़े जबड़े और चमकदार दाँत दिखायी देते हैं। उसके तीखे दाँत बड़े गजदंत से लगते हैं लेकिन ये अंदर की ओर मुड़ते हैं, मुंह से बाहर नहीं निकलते।

दरियाई घोड़े के जबड़े इतने मजबूत होते हैं कि मगर के कठोर कवच को भी फाड़ देते हैं। उसके मुंह में तरबूज वैसा ही लगेगा जैसे तुम्हारे मुंह में आलूचा। स्वभाव से वह उग्र नहीं होता। कई बार ऐसी घटनाएँ भी सुनने को मिलती हैं कि दरियाई घोड़े ने डोंगी पर हमला करके उसे उलट दिया और उसे अपने जबड़ों में लेकर चबा डाला। ऐसा होता ज़रूर है किंतु तभी जब दरियाई घोड़े का बच्चा आस-पास हो और मगर बहुत हों। बच्चे उनके आस-पास हों तो दरियाई घोड़े मगरों से बहुत डरते हैं। क्रुद्ध दरियाई घोड़ा नाव पर इसलिए हमला करता है कि वह उसे किसी प्रकार का मगर समझ बैठता है।

दरियाई घोड़ा शाकाहारी होता है और उसे बहुत ज्यादा भूख लगती है। वह प्रति दिन दो-सौ सेर तक हरी घास

आदि खा सकता है ।

सभी पेटू पशुओं की तरह दरियाई घोड़ा भी वहुत आराम-पसंद होता है और धीमी गति से बहनेवाली नदियों के शांत क्षेत्रों में दिन भर पड़ा रहता है। पानी की पसंद में उसका मुकाबला भैंस ही कर सकती है। भैंसों की तरह ही उन्हें अपने आस-पास की चीजों में बहुत कम रुचि होती है। कभी-कभी वे भयानक घुरघुराहट, फुफकार या चीत्कार सी निकालते हैं जो एक मील दूर तक सुनी जा सकती है ।



कंगारू

यह जानवर केवल आस्ट्रेलिया, न्यू गिनी और आस-पास के द्वीपों में पाया जाता है। कंगारू लगभग आदमी जितना ऊंचा होता है। उसकी पिछली टाँगें बहुत लंबी होती हैं जिनकी सहायता से वह लंबी छलांग लगा सकता है। कभी-कभी पंद्रह फुट तक की लंबी छलाँग लगा लेता है। इनका उपयोग वह चलने में

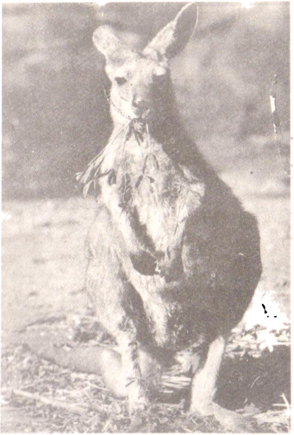


नहीं करता। वह इन्हें जमीन खोदने, चीज़ों को पकड़ने और भोजन को मुंह तक पहुँचाने के काम में लाता है। उसकी पूँछ लंबी, मोटी और मजबूत होती है। इसका काम छलांग मारते समय और बैठते समय शरीर का संतुलन बनाये रखना है। कंगारू का सिर कुछ कुछ हिरन के सिर जैसा होता है और उसकी आँखें भी हिरन की तरह सुंदर, गोल और भोली होती हैं।

कंगारू का भोजन केवल शाक-सब्जियाँ हैं। ये बहुत डरपोक होते है और आदमियों से दूर भागते हैं। किंतु कुत्तों के हमला करने पर ये पिछली टाँगों और तीखे-नोकदार पंजों से अपनी रक्षा करते हैं।

कंगारू-माँ अपने छोटे बच्चों को, जब तक वे आत्मनिर्भर नहीं हो जाते, पेट के नीचे लगी थैली में उठाये रहती है। कभी-कभी इन बच्चों को चलती हुई माँ की थैली से बाहर झांकते और घास चरते हुए देखा जा सकता है। थैली छोड़ने के बाद भी जब कभी उन्हें खतरा दिखायी देता है तो वे वापस थैली में जाकर छिप जाते हैं।

दौड़ते समय कंगारू को बार-बार पीछे देखने की अजीब-सी आदत है।



इस आदत के कारण कभी-कभी वह पेड़ के तनों से टकरा जाता है। पकड़े जाने के बाद उसे आसानी से पालतू बनाया जा सकता है। चूंकि यह पशु साहसी होता है इसलिए चिड़ियाघर में भी खूब फूलता-फलता है।

कंगारू अनेक प्रकार के होते हैं।



तेंदुआ

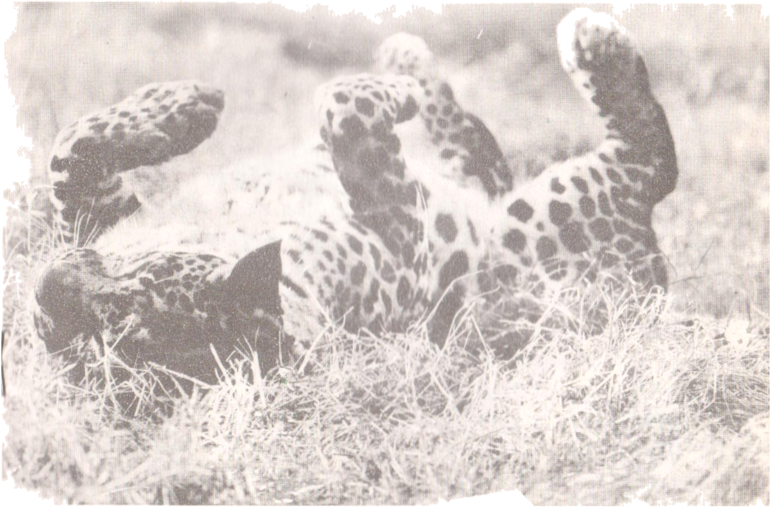
कहते हैं कि बिल्ली शेर की मौसी है और उसने शेर को सब कुछ सिखाया। तेंदुआ भी बिल्ली के परिवार का है और ज़रा-सा समय बर्बाद किये बिना उसने पेड़ों पर चढ़ना सीख लिया। पेड़ों पर आसानी से चढ़ सकने के कारण ही तेंदुआ बंदरों के लिए बहुत खतरनाक हो जाता है। अधिकतर यह बंदरों और कुत्तों को मारकर खाता है लेकिन मौका मिलने पर बकरी को भी खा जाता है।

भारत में बाघों की संख्या तो बहुत कम रह गयी है लेकिन तेंदुए अब भी काफी संख्या में पाये जाते हैं। यह जानवर बहुत चालाक होता है। अपने आपको छिपाने की कला में निपुण, यह जानवर मैदानों में भी रह सकता है और पहाड़ों पर भी। बाघ लंबी घास के बीच रहना पसंद करता है जिसका अर्थ है कि उसे प्रायः खुले स्थान में आना पड़ता है। तेंदुए को घना जंगल अच्छा लगता है। जब वह पत्तोंवाले पेड़ पर दुबका बैठा होता है तो शरीर के धब्बों के कारण उसे पहचानना कठिन हो जाता है।

कुछ लोगों का विचार है कि तेंदुआ और गुलदार दो अलग-अलग जानवर हैं, किन्तु ये एक ही जानवर के दो नाम हैं।

तेंदुए का रंग भूरा-पीला होता है और बीच में सुंदर काले धब्बे होते हैं, लेकिन कहीं-कहीं बिल्कुल काला तेंदुआ भी पाया जाता है। भारतीय और अफ्रीकी जातियों के अतिरिक्त तेंदुओं की और भी कई जातियाँ होती हैं, जैसे दक्षिणी अमरीका का जागुआर, एशिया का लंबे बालोंवाला आउंस, अमरीका का प्यूमा जिसे कूगार भी कहते हैं, उष्णकटिबंधीय अमरीका का ओसलाट और इंडोनेशिया का रिमनदहन। अंतिम किस्म के तेंदुए को बादली तेंदुआ या कछुआकवच बाघ भी कहते हैं क्योंकि उसमें तेंदुए जैसे धब्बे और बाघ जैसी धारियाँ होती हैं।

भारतीय चीता, जिसे शिकारी तेंदुआ भी कहा जाता है, अब कहीं नहीं मिलता।



बबरशेर

तेंदुआ पेड़ों पर आसानी से चढ़ जाता है, बाघ मुश्किल से चढ़ पाता है, किंतु बबर शेर चढ़ ही नहीं सकता। लेकिन उसे इस कला की जरूरत भी नहीं होती। वह इतना ताकतवर और तगड़ा होता है कि पंजे की एक ही चोट से भैंसे को नीचे गिरा सकता है। आप लोगों में से कुछ ने देखा होगा कि शेर के धीरे से पंजा मारने पर भी शेरनी जमीन पर लुढ़कती हुई चली जाती है, यद्यपि शेरनी का वजन शेर से कुछ ही कम होता है।

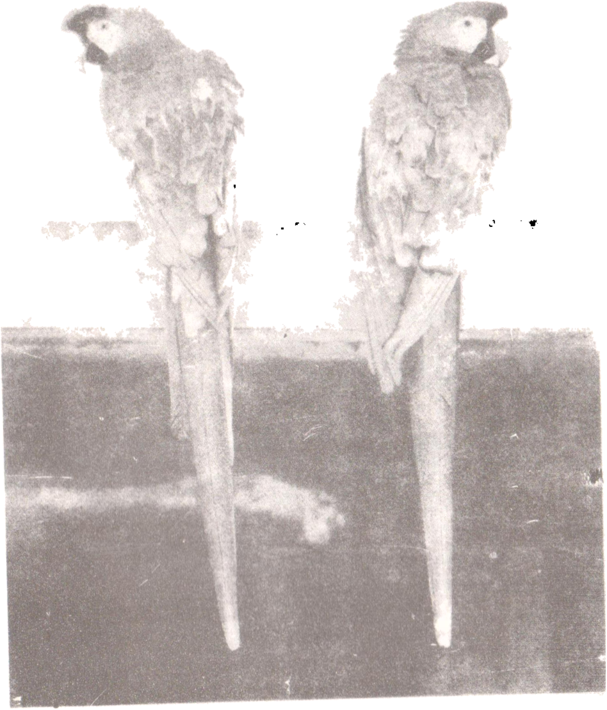
जो लोग चिड़ियाघर के पास रहते हैं उन्होंने रात के समय शेर को गरजते जरूर सुना होगा। बाघ की अपेक्षा शेर अधिक बार गरजता है। यदि आप गुजरात में गीर के जंगल के निकट नहीं रहते हैं तो आप वन्य शेर को कभी नहीं देख सकते क्योंकि यह महान पशु भारत में अब लगभग समाप्त हो गया है। पहले शेर उत्तरी भारत और मध्य भारत में आम पाये जाते थे किंतु वे पशुओं के लिए इतने घातक थे कि उन्हें शिकार करके मार डाला गया। यह काम कोई विशेष कठिन नहीं था क्योंकि वे घने जंगल की अपेक्षा खुले इलाकों को पसंद करते हैं। अफ्रीका में शेर का अब भी साम्राज्य है।

पूरे जवान नर शेर के घनी और खुरदरी केसर होती है जिसके लंबे बाल गरदन, कंधों और ठोडी के एक भाग पर बिखरे होते हैं। शेरनी के केसर नहीं होती और नर शेर में भी यह तीन वर्ष की आयु से पहले नहीं उगती।

शेर वन्य स्थिति में बहुत उग्र और खूंख्वार होता है। शायद इसीलिए कुछ लोग सोचते हैं कि उनके पिंजरे में जाने के लिए बहुत बड़े साहस की आवश्यकता होगी। किंतु शेर को बड़ी आसानी से सधाया और पालतू बनाया जा सकता है।

बहुत से शेरों ने आदमी के प्रति प्यार दिखाया है। पेरिस के चिड़ियाघर के दो शेर अपने रखवाले को इतना चाहते थे कि उनके बीमार पड़ने पर वे बहुत दुखी दिखायी दिये और जब वह स्वस्थ होकर वापस आया तो वे प्रसन्नता से गरजते हुए उसकी ओर दौड़े और उसके हाथों तथा मुंह को चाटने लगे।





मकाव

मकाव अधिकतर दक्षिणी अमरीका में पाये जाते हैं जो अनेक सुंदर पक्षियों का घर है। यह पक्षी इतना रंगीन और ज़िन्दादिल होता है कि कोई भी चिड़िया-घर इसके बिना नहीं रहना चाहेगा।

इनका विशेष आकर्षण है, बड़ा आकार, बहुत लंबी पूंछ और कई किस्म के शानदार रंग। यदि मकाव आस-पास हो तो आप उसकी ओर देखे बिना नहीं रह सकते। उसके शरीर का शोख लाल रंग, पंखों और पूंछ में लाल, पीले, नीले और हरे रंगों की छटा उसे तोतों का राजा घोषित करती है।

सबसे अधिक लोकप्रिय मकाव वे होते हैं जिनका रंग नीला-पीला या लाल-नीला होता है। मकाव की पूरी लंबाई लगभग चालीस इंच होती है जिसमें से लगभग दो फुट लंबाई तो केवल पूंछ की होती है। तोतों के परिवार के बहुत से सदस्य हरे होते हैं ताकि वे पेड़ों की पत्तियों में छिपकर अपनी रक्षा कर सकें। मकाव को रक्षा करनेवाले इस रंग की ज़रूरत नहीं पड़ती। शायद इसलिए कि वे बड़ी ऊंचाई पर उड़ सकते हैं और आम तौर पर सबसे ऊंचे पेड़ों की चोटियों पर बैठते हैं।

मेंड्रिल

बेबून परिवार में अनेक किस्म के बंदर होते हैं लेकिन अफ्रीका से आये मेंड्रिल की शक्ल सबसे अधिक चौंकाने-वाली होती है।

ऐसा लगता है कि इन्द्रधनुष के सब रंगों के मिलने से मेंड्रिल का रूप बना है और ये रंग आम-तौर पर वहाँ मिलते हैं जहाँ उनकी कम से कम उम्मीद होती है। मुँह का रंग किरमिजी होता है। नाक के दोनों ओर चमकदार नीले धब्बे होते हैं किंतु नाक का रंग शोख लाल होता है। पहली नज़र में ऐसा लगेगा कि उधर पूंछ के नीचे आधुनिक चित्रकला का कोई अमूर्त चित्र है, यानी वहाँ सिंदूरी, किरमिजी और बैंजनी रंग की घनी फुहारें दिखायी देंगी। बालों का सामान्य रंग जैतूनी भूरा होता है और ठोडी पीले रंग की छोटी और नोकदार दाढ़ी से सजी होती है। किंतु रंगों की यह छटा केवल नर मेंड्रिल में ही दिखायी देती है। मादा मेंड्रिल की थूथन नीले रंग की होती है। इसके अतिरिक्त उसमें रंग का कोई विशेष आकर्षण नहीं होता।

अफ्रीका में यह जानवर आम पाया जाता है लेकिन बहुत ताकतवर और चालाक होने के कारण इसे आसानी से नहीं पकड़ा जा सकता। आम तौर पर इसे छोटी उम्र में ही पकड़ा जाता है और यह चिड़ियाघर के जीवन के अनुरूप अपने आपको आसानी से ढाल लेता है।

उग्रता के बावजूद मेंड्रिल शाकाहारी पशु है, किंतु अन्य बेबूनों की तरह यह भी अक्सर कुछ चींटियों या कभी कनखजूरों को मिलाकर भोजन की सुगंध और स्वाद बढ़ा लेता है।



पिसूरी मृग

जैसे बिल्ली शेर का अत्यंत छोटा रूप है उसी प्रकार पिसूरी को हिरन का बहुत छोटा रूप कह सकते हैं। पिसूरी को जंगल में देखना बहुत कठिन है इसलिए उसे देखने का सबसे अच्छा अवसर चिड़ियाघर में ही मिलता है। यह लघु प्राणी लंबाई में केवल डेढ़ फुट और ऊंचाई में छोटे कुत्ते जितना होता है। इसमें हिरनों की सभी विशेषताएं होती हैं किंतु सींग नहीं होते। ऊपर के जबड़े के दोनों ओर लंबा दाँत होता है जो सुअर के दाँत जैसा लगता है।

इस हिरन का चेहरा कुछ-कुछ चूहे से मिलता है। अंग्रेज़ी में उसे 'माऊस डीयर' (मूषकमृग) का नाम उसके छोटे होने के कारण नहीं, उसके भीरू स्वभाव के कारण और चूहे से शक्ल मिलने के कारण दिया गया है। उसकी गहरी भूरी आँखें बहुत बड़ी होती हैं। कान भी बड़े होते हैं, लेकिन बहुत बड़े नहीं। उसकी छोटी पूंछ शरीर से चिपकी रहती है। वह अपने खुरों की नोकों पर चलता है और अपनी टाँगों को बड़ी नज़ाकत से उठाता है मानो वह चलते समय आवाज करने से डरता हो। जरा-सी आवाज़ पर भी वह एक पैर उठाकर खड़ा हो जाता है अर्थात् तेज़ी से भागकर



छिप जाने के लिए तैयार हो जाता है। यह चट्टानों की दरारों में सारा दिन छिपा रहता है और शाम को भोजन की तलाश में बाहर निकलता है। यह इतना छोटा होता है कि छोटे से छोटा हिंस्र पशु भी उसे मार सकता है। शायद इसीलिए पिसूरी मृग अधिक संख्या में नहीं मिलते किंतु उन्हें आसानी से वश में करके प्यारा साथी बनाया जा सकता है।



शुतुरमुर्ग



कुछ पक्षी उड़ना नहीं जानते और ऐसे पक्षियों में सबसे प्रसिद्ध है शुतुरमुर्ग।

शुतुरमुर्ग इस समय पाये जानेवाले पक्षियों में सबसे बड़ा पक्षी है। यह औसत आदमी से दो फुट तक ऊंचा होता है। यद्यपि यह उड़ नहीं सकता, अपनी शक्तिशाली लंबी टाँगों से यह तीस मील प्रति घंटा की गति से दौड़ सकता है। जब यह शत्रु से दूर भागने में सफल नहीं होता तो अपनी रक्षा के लिए परों का उपयोग भी करता है। शुतुरमुर्ग के केवल दो पंजे होते हैं। उसके सिर, गरदन और टाँगों पर बाल नहीं होते।

शुतुरमुर्ग मुख्य रूप से फल, अनाज, पत्तियाँ, कोंपलें, घोंघे और कीड़े आदि खाता है। अपने भोजन को पीसने के लिए यह पत्थर के टुकड़े भी निगल जाता है। उसे लोहे, काँच, चमड़े और अन्य सख्त चीज़ों के टुकड़े निगलते हुए भी सुना गया है। शुतुरमुर्ग सारे अफ्रीका और अरेबिया में आम पाये जाते थे किंतु अब वे मध्य अफ्रीका में या दक्षिण अफ्रीका के फार्मों में ही मिलते हैं। फार्मों में उन्हें पंखों के लिए पाला जाता है।

शुतुरमुर्ग का अंडा बहुत बड़ा होता है। यह मुर्गी के लगभग चौबीस अंडों के बराबर होता है। अफ्रीका के आदिवासी



इसके खोल को पानी के बरतन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। नर पक्षी रात के समय अंडों पर बैठता है और मादा सुबह-शाम। दिन की गरमी में घोंसले को अक्सर खुला छोड़ा जाता है। मादा शुतुरमुर्ग भूरे पंखों के कारण सूखी झाड़ी जैसी लगती है। इसलिए घास के मैदानों में उसे आसानी से नहीं पहचाना जा सकता।

ऊदबिलाव

ऊदबिलाव संसार के लगभग सभी भागों में पाये जाते हैं। उनका भोजन मुख्य रूप से मछली है। ये बहुत अच्छे तैराक होते हैं और उन्हें पानी में डूबते-उतराते देखने में बड़ा मज़ा आता है।

यदि आप ऊदबिलाव को ध्यान से देखें तो पता चलेगा कि उसका शरीर अपने जीवन की परिस्थितियों के अनुरूप कितना अच्छा ढला होता है। उसका शरीर लंबा और संकरा होता है, साथ ही वह चौड़ा और चपटा भी होता है। इसीलिए वह बड़ी सुविधा से तैर सकता है। उसकी पूंछ चपटी और लगभग एक फुट लंबी, कान बहुत छोटे और टाँगें छोटी और मज़बूत होती हैं। उसके पंजों में तीखे नाखून होते हैं और पंजों के बीच वैसी ही एक झिल्ली होती है जैसी बत्तख के पंजों के बीच होती है। ये झिल्लीदार पैर किश्ती के चप्पुओं का काम करते हैं और इनकी सहायता से ऊदबिलाव तेज़ी से पानी में तैर सकते हैं।

ऊदबिलाव की एक विशेषता यह है कि यह जब चाहे अपने नथुनों और कान के सुराखों को बंद कर सकता है। इससे यह पानी के नीचे कुछ समय तक रह सकता है। मछली पकड़ते हुए यह गुण बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

ऊदबिलाव आम तौर पर, माँ-बाप और बच्चों को मिलाकर, पाँच या छह के दल में रहते हैं। मछली पकड़ने और खेलने के समय को छोड़कर दूसरे समय ये



बिलों में रहते हैं। ये शोर करनेवाले और खेल-पसंद जानवर होते हैं और पहाड़ी के नीचे की ओर फिसलने में इन्हें बड़ा मज़ा आता है। अक्सर इन्हें मिट्टी या बरफ की पहाड़ी के नीचे एक-दूसरे के पीछे फिसलते हुए देखा जा सकता है। मछली पकड़ने का काम ये मुख्य रूप से रात को करते हैं। प्रायः यह काम मिलकर किया जाता है और मछलियों को एक दूसरे की ओर खदेड़ा जाता है।

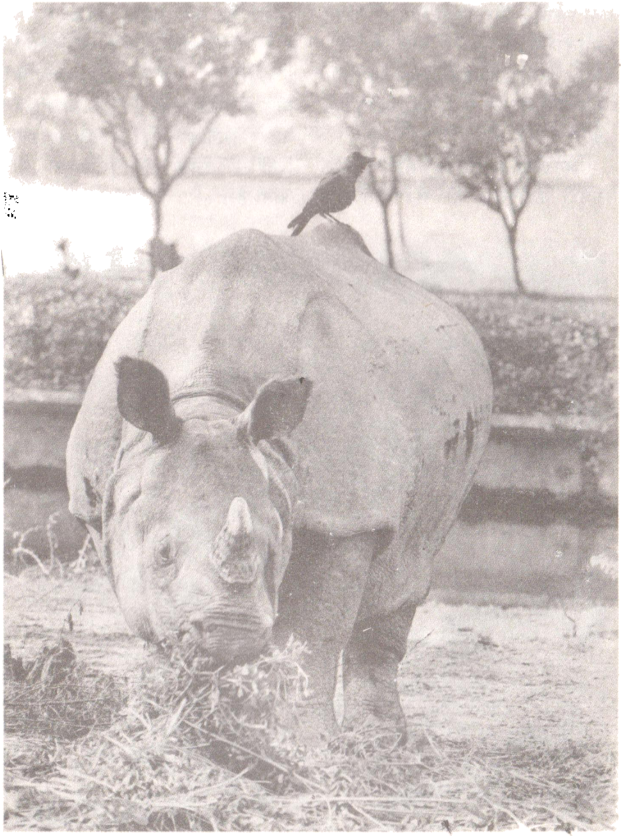
भारत के कुछ भागों में ऊदबिलावों को मछुओं की सहायता के लिए पाला जाता है। यदि छोटी उम्र में पकड़ लिया जाये तो उसे बड़ी असानी से सिखाया



जा सकता है और वह कुत्ते की तरह अपने मालिक के पीछे चलना सीख जाते हैं। मछुए पालतू ऊदबिलावों का इस्तेमाल मछलियों को जाल की ओर खदेड़ने में करते हैं।

अमरीका में उत्तरी प्रशांत तट पर समुद्री ऊदबिलाव भी पाये जाते हैं। लेकिन हम जिन ऊदबिलावों को जानते हैं वे ताजे पानी के जीव हैं और नदियों तथा झीलों मे रहते है। ऊदबिलाव के बाल घने और सुंदर होते हैं। गरमी में बाल लगभग काले होते हैं किंतु सरदी के दिनों में इनका रंग लाल-भूरा हो जाता है।





गैंडा

यद्यपि अनेक प्रकार के गैंडे इस धरती पर अब भी पाये जाते हैं, यह पशु भी मनुष्य के लोभ के कारण धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। अफीका के हाथी के दाँत, एशिया के बाघ की खाल और गैंडे के सींग इतने कीमती माने जाते हैं कि इस कारण इस पशु का जीवन खतरे में पड़ गया है। गैंडे को शायद अब चिड़ियाघर में ही शरण लेनी पड़ेगी।

गैंडे के लिए अंग्रेज़ी में 'राइनोसोरस' शब्द है जो ग्रीक भाषा का शब्द है और इसका अर्थ है नाक का सींग। यह नाम इसलिए पड़ा कि इसकी नाक के सिरे पर एक बड़ा सींग उगा होता है। इस सींग से गैंडा उन पेड़ों और झाड़ियों को उखाड़ता है जिनकी पत्तियों और फलों को वह खाता है। यद्यपि गैंडा शांत स्वभाव का पशु है, घायल होने पर वह बड़ा भयानक हो जाता है और इसका सींग छोटा होते हुए भी, घातक हथियार बन जाता है। ऐसा माना जाता है कि इसके सींग में औषधि के गुण होते हैं।

गैंडे की खाल बड़ी मोटी और सख्त होती है। इस पर बंदूक की गोली भी बहुत कम असर करती है। किंतु उसकी नजर कमज़ोर होती है और वह अपने सामने की चीज़ों को भी नहीं देख पाता। दूसरी ओर सूंघने और सुनने की उसकी शक्ति बहुत तेज़ होती है और आने-वाले खतरे से उसे सावधान कर देती है।

कंधों के आगे-पीछे और रानों के आगे चमड़ी की भारी परतों के कारण इस विशालकाय पशु की खाल बड़ी-बड़ी ढालों में बट जाती है। अपने बेडौल शरीर, लंबी किश्ती के आकार का सिर, परतदार कवच और पपड़ीदार खाल के कारण गैंडा किसी अतीत युग के दैत्य-प्राणी जैसा लगता है।

बाघ

भारत के कुछ भागों में कहावत है कि बाघ को मामा कहकर पुकारो तो वह बिल्कुल नहीं छेड़ेगा । किंतु इस रोबीले और भयानक मामा से मिलने के अवसर हर साल कम होते जा रहे हैं क्योंकि बाघों की संख्या कम होती जा रही है ।

जिस प्रकार अफ्रीका के जंगलों का राजा ववर शेर होता है उसी तरह भारत के जंगलों का राजा बाघ है । बाघ डील-डौल और ताकत में शेर की वरावरी करता है । शरीर की सुंदरता और चाल की गरिमा में तो वह बबरशेर से निश्चय ही आगे निकल जाता है ।

आम तौर से बाघ खुले स्थानों में रहता है । वह दिन भर लंबी घास में लेटा रहता है । दिल्ली के चिड़ियाघर की योजना बनानेवालों ने बाघ के लिए घास से ढका हुआ चट्टानी द्वीप बनाकर और उसके नहाने के लिए काफी पानी का प्रबंध कर अच्छी सूझ-बूझ का परिचय दिया है । बिल्लियों की जाति के दूसरे प्राणियों से भिन्न बाघ को पानी बहुत अच्छा लगता है और वह अच्छा तैराक होता है ।

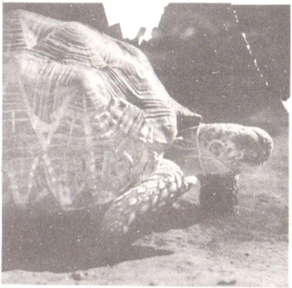
बाघ भारत के जंगलों का राजा तब तक वना रहेगा जब तक उसे भोजन और रहने की जगह देनेवाले जंगल बचे रहेंगे । किंतु जैसे-जैसे मनुष्यों की संख्या बढ़ती जा रही है, जंगल समाप्त होते जा रहे हैं और बाघ जैसे पशु बेघर होकर शिकारियों के हाथों मारे जा रहे हैं । बाघ की खाल के बहुत कीमती होने के कारण भी वहुत से बाघों को मारा जा रहा है । अव बाघ के शिकार पर कानून की पाबंदी है, और हमें यह आशा करनी चाहिए कि यह राजसी पशु हमारे जंगलों में बचा रहेगा और जंगल भी बचे रहेंगे ।







थल-कछुआ और जल-कछुआ



कुछ कछुए जमीन पर रहते हैं और कुछ पानी में। पानी में रहनेवाले कछुओं में भी कुछ समुद्र के पानी में रहते हैं और कुछ नदियों आदि के ताज़ा पानी में। लेकिन ये सभी उन रेंगनेवाले जीवों के परिवार में आते हैं जिनके शरीर हड्डी के खोल में बंद होते हैं। खाना खाते समय या चलते समय ये अपने सिर और टाँगों को खोल से बाहर निकाल सकते हैं और अपनी रक्षा करते समय वे उन्हें वापस अपने खोल में छिपा सकते हैं। सभी कछुए गरम देशों में रहते हैं और सभी माँस-भक्षी होते हैं। वे पौधों और कीड़ों को भी खा जाते हैं।

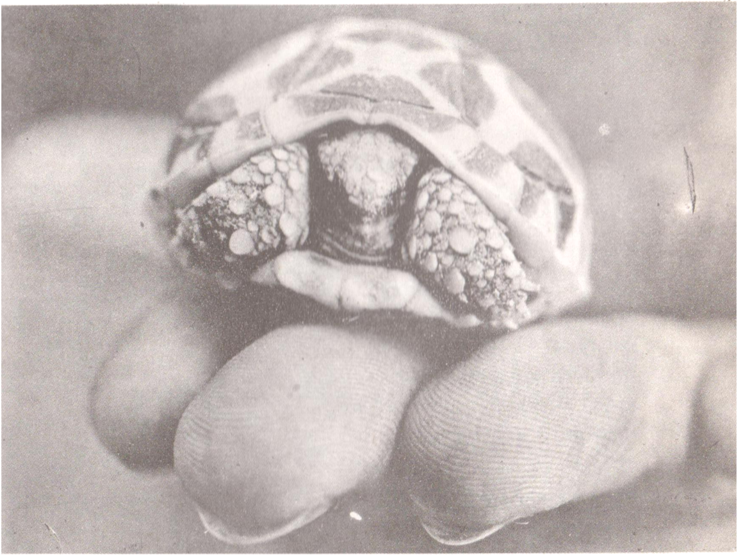
इनकी आयु बहुत लंबी होती है। सेंट हेलेना के द्वीप के एक विशाल कछुए के बारे में यह कहा जाता है कि वह तब से उस द्वीप में है जब नैपोलियन को वहाँ कैद में रखा गया था (1821-1825) एक और विशाल कछुआ जिसे चार साल की उम्र में, 1766 में मारीशस ले जाया गया था, सन् 1918 में 156 वर्ष की उम्र में मरा। चिड़ियाघरों और उद्यानों में रखे गये अनेक कछुए सौ वर्ष से अधिक समय तक जीवित रहे हैं।

गैलापगास द्वीपसमूह के विशालकाय कछुओं का खोल आमतौर पर चार फुट लंबा और लगभग छह सौ पौंड भारी होता है। बड़े समुद्री कछुए इनसे भी बड़े होते हैं। सबसे बड़ा समुद्री कछुआ, चीमड़ कछुआ, आठ फुट लंबा और एक टन भारी होता है।

जल-कछुए भारत की नदियों में आम पाये जाते हैं। ये कछुए लगभग दो फुट लंबे और इतने ही चौड़े होते हैं, लेकिन इनका शरीर कुछ चपटा होता है। वे अपनी छोटी और मज़बूत टाँगों को चलाते हुए पानी में आगे बढ़ते हैं। जब वे साँस लेने के लिए सतह पर आते हैं तो इनकी गरदन और सिर ही पानी

के ऊपर दिखायी देते हैं। पानी की सतह पर इनका सिर धूसर हरे साँप के सिर जैसा लगता है। जीवाश्मों के रूप में भारत में पाये गये कुछ कछुए सोलह फुट तक लंबे थे। ये कछुए सचमुच दैत्य प्राणी रहे होंगे।

कछुओं के दाँत नहीं होते। उनके जबड़े सींग से ढके होते हैं इसलिए इनके मुंह कुछ चोंच जैसे होते हैं। वे तोतों की तरह काटते भी हैं और कुछ, विशेष रूप से अमरीका के जल-कछुए, तो बहुत बुरी तरह काटते हैं।

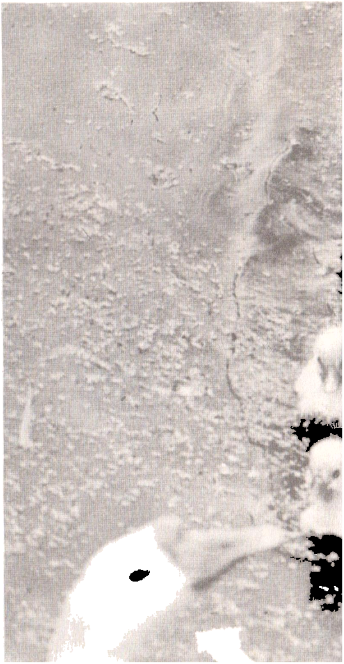


जालीदार पैरोंवाले पक्षी

चमरघेंघ सारस जल में चलनेवाला पक्षी है, काकातुआ और मकाव पेड़ों पर चढ़नेवाले पक्षी और कीवी और शुतुर-मुर्ग दौड़नेवाले पक्षी हैं । अब हम जालीदार पैरोंवाले पक्षियों से परिचय करेंगे और इनमें सबसे ज्यादा जाने-पहचाने हैं बत्तख, हंस और राजहंस । ये पक्षी अपना अधिकांश समय तालाबों और झीलों में तैरते हुए बिताते हैं इसलिए इन्हें वहाँ आराम से देखा जा सकता है ।

संसार भर में बत्तखों और हंसों की अनेक किस्में पायी जाती हैं और उनमें से कुछ तो अत्यंत सुदर पंखोंवाले होते हैं । एशिया की कुछ सुंदर रंगोंवाली बत्तखें ब्रिटेन और यूरोप के सजधज वाले तालाबों में देखी जा सकती हैं जहाँ वे स्वतंत्र पक्षियों की तरह रहती हैं ।

राजहंस बहुत सुंदर और मनोहारी पक्षी है । ये बहुत शक्तिशाली भी होता है और जब उसके बच्चे हों तो उससे





दूर रहना ही ठीक होता है। उसके पंख इतने मजबूत होते हैं कि उनसे कुत्ते को मार सकते हैं और आदमी की टांग तोड़ सकते हैं, इसलिए राजहंस के घोंसले के निकट नहीं जाना चाहिए। ब्रिटेन में राजहंस को 'शाही पक्षी' कहा जाता था क्योंकि सभी राजहंस सम्राट के या जिन व्यक्तियों को वे सम्राट द्वारा दिये गये थे उनके, माने जाते थे। आज भी टेम्स नदी के राजहंसों पर महारानी का ही अधिकार माना जाता है।

जालीदार पैरोंवाले पक्षियों में सबसे ऊंचा पक्षी बगहंस (फ्लैमिंगो) होता है जो लगभग आदमी जितना ऊंचा होता है। इसका डील-डौल तो बड़ा अजीब होता है लेकिन रंग बहुत सुंदर होता है। नर फ्लैमिंगो के पंख चमकदार गुलाबी लाल होते हैं। ये पक्षी अत्यंत गरम और धूपवाले देशों में पाये जाते हैं। स्पेन के दलदली इलाकों में ये 300 से 500 तक के झुंडों में चलते हैं। बगहंसों के झुंड का एक साथ उड़ना और हजारों किरमिजी पंखों का आसमान की पृष्ठभूमि में बिखरना इतना सुंदर लगता है कि उसकी बराबरी शायद ही कोई सुंदर दृश्य कर सकेगा।

बगहंस के साथ कभी-कभी दिखायी देनेवाला पेलिकन भी बड़े आकार का विचित्र पक्षी है और उसके पंख भी बहुत सुंदर होते हैं। उसके पंख सफेद होते हैं और उन पर गुलाबी रंग की झांई होती है। किंतु उसके वक्ष के पंख सुनहरे पीले होते हैं। उसकी चोंच पीली और नोक पर लाल होती है। चोंच के साथ लगी एक बड़ी थैली होती है जिसमें वह मछलियां पकड़कर रखता जाता है और फिर इच्छा होने पर खाता है।



ज़ेबरा

ज़ेबरा अपने मनमोहक रूप के कारण चिड़ियाघर जानवाले लोगों में बहुत लोकप्रिय है । इसकी शक्ल घोड़े की अपेक्षा गधे से ज्यादा मिलती-जुलती है । इसकी पूंछ के सिरे पर बालों का घना गुच्छा होता है और आयल सीधी ऊपर की ओर उठी रहती है । इसकी खाल विशेष रूप से सुंदर होती है जिसका रंग आम तौर पर दूधिया पीला होता है और सारे शरीर पर मखमली काली धारियाँ होती हैं। ज़ेबरा अफ्रीका में पाया जाता है । विशेषकर आशा अंतरीप के पर्वतीय भागों में । यह बहुत ताकतवर, तेज़ और अचूक कदम रखनेवाला जानवर है। यह पर्वतों और चट्टानों पर बकरी की तरह फुरती से दौड़ सकता है । यदि इसे पालतू बनाया जा सके तो यह घोड़े की तरह बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकता है किंतु इसे पालतू बनाना बहुत कठिन काम है । चिड़ियाघर में ज़ेबरे को घूमने-फिरने के लिए काफी स्थान दिया जाना चाहिए ।

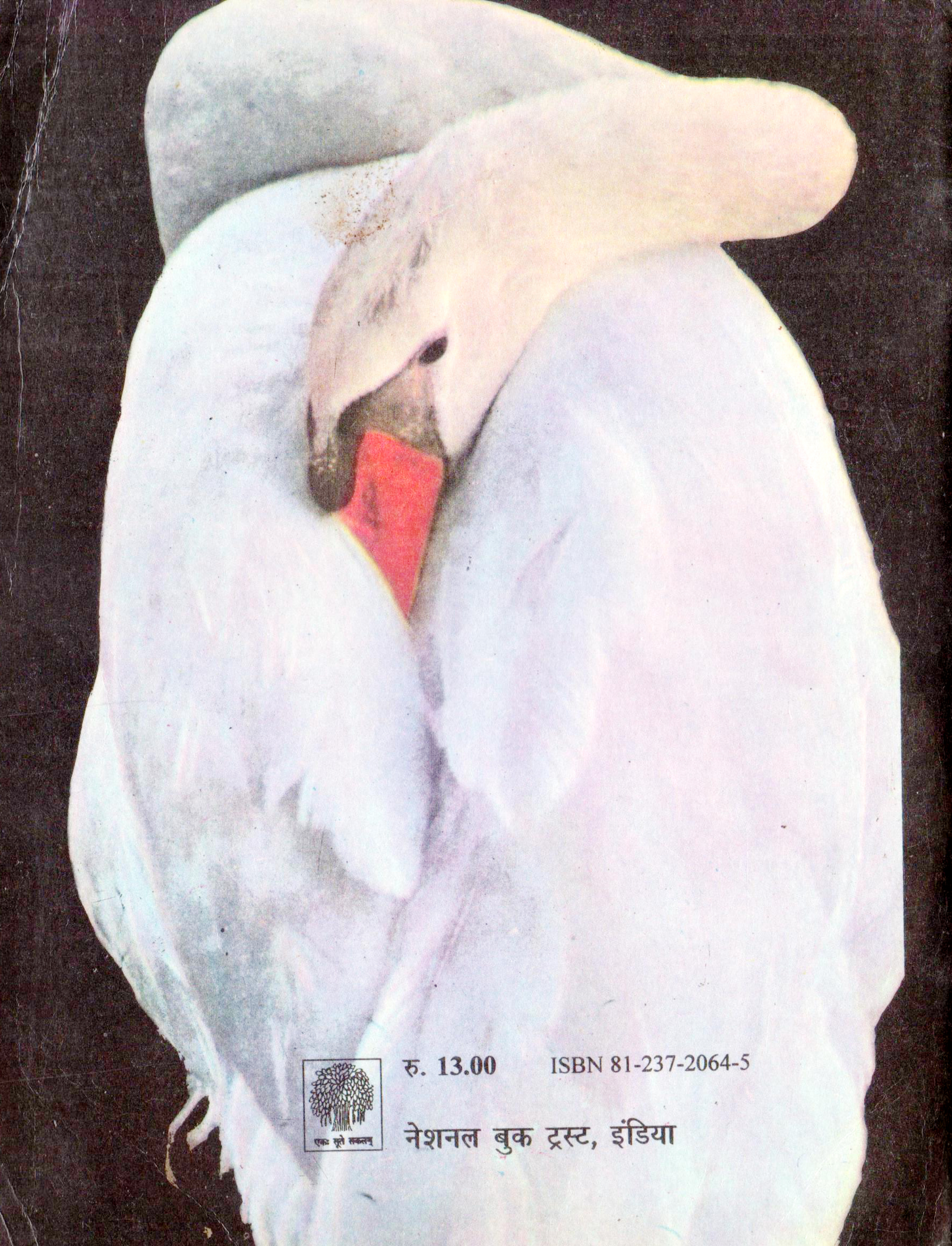
ज़ेबरा सामान्य रूप से झुंडों में रहते हैं और जब वे पहाड़ी इलाके में चर रहे होते हैं तो उनमें से एक हमेशा पहरा देता रहता है । जब मनुष्य या दूसरे पशु उन पर आक्रमण करते हैं तो वे अपने सिरों को अंदर की ओर करके घेरा बना लेते हैं और शत्रु को लातें मार कर अपनी रक्षा करते हैं।







मुद्रकः बंगाल ऑफ्सेट
नई दिल्ली



रु. 13.00

ISBN 81-237-2064-5

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया